3

चित्रकला के आवश्यक तत्त्व
(Fundamentals of Painting)

3.0 भूमिका

चित्रकला एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वस्तुओं को रंगीन अथवा सफेद या काले रंगों में प्रस्तुत किया जाता है। चित्रकार स्पैचुला, नाईफ या ब्रुश द्वारा रंगों को समतल सतह पर लगाते हैं। आजकल कम्प्यूटर द्वारा भी चित्र बनाया जाता है, जिसे बाद में कागज पर भी छाप सकते हैं। यह छपाई रंगीन अथवा काली या सफेद भी हो सकती है।

3.1 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आपः–

- चित्रकला में व्यवहार किए गए साधनों को पहचान पाएंगे;
- जल रंग, एक्रेलिक तथा तेल रंगों में भिन्नता पहचान पाएंगे;
- हर प्रकार के ब्रुश के बारे में बता पाएंगे;
- दिए गए स्थान में 2 या 3 आकृतियों को व्यवस्थित रूप से सजा कर विषय–वस्तु का पूर्ण चित्र बना सकेंगे;
- चित्रकला के विभिन्न साधनों का सही प्रयोग कर किसी कृति की रचना कर पाएंगे;
- सजीव तथा निर्जीव वस्तुओं तथा फार्मों का अंकन कर सकेंगे।

3.2 औजार सामग्री (Materials)

शुरूआत में एक सफेद कागज़ के टुकड़े तथा पेंसिल एवं रबड़ का प्रयोग कीजिए। (3.2) इसके पश्चात जल–रंग, पोस्टर कलर या एक्रेलिक का प्रयोग किया जा सकता है। इन रंगों का प्रयोग आवश्यकतानुसार अलग–अलग आकार के ब्रुशों द्वारा कीजिए। (3.2क, 3.2ख) जो पहली बार चित्र बना रहे हैं, उनके लिए क्रेऑन या मोम रंग सही रहते हैं। ये सारे माध्यम काट्रिज पेपर पर अच्छे लगते हैं। परन्तु साधारण कागज़ पर पहले कुछ अभ्यास करने के बाद इन माध्यमों का प्रयोग करना ठीक रहेगा।

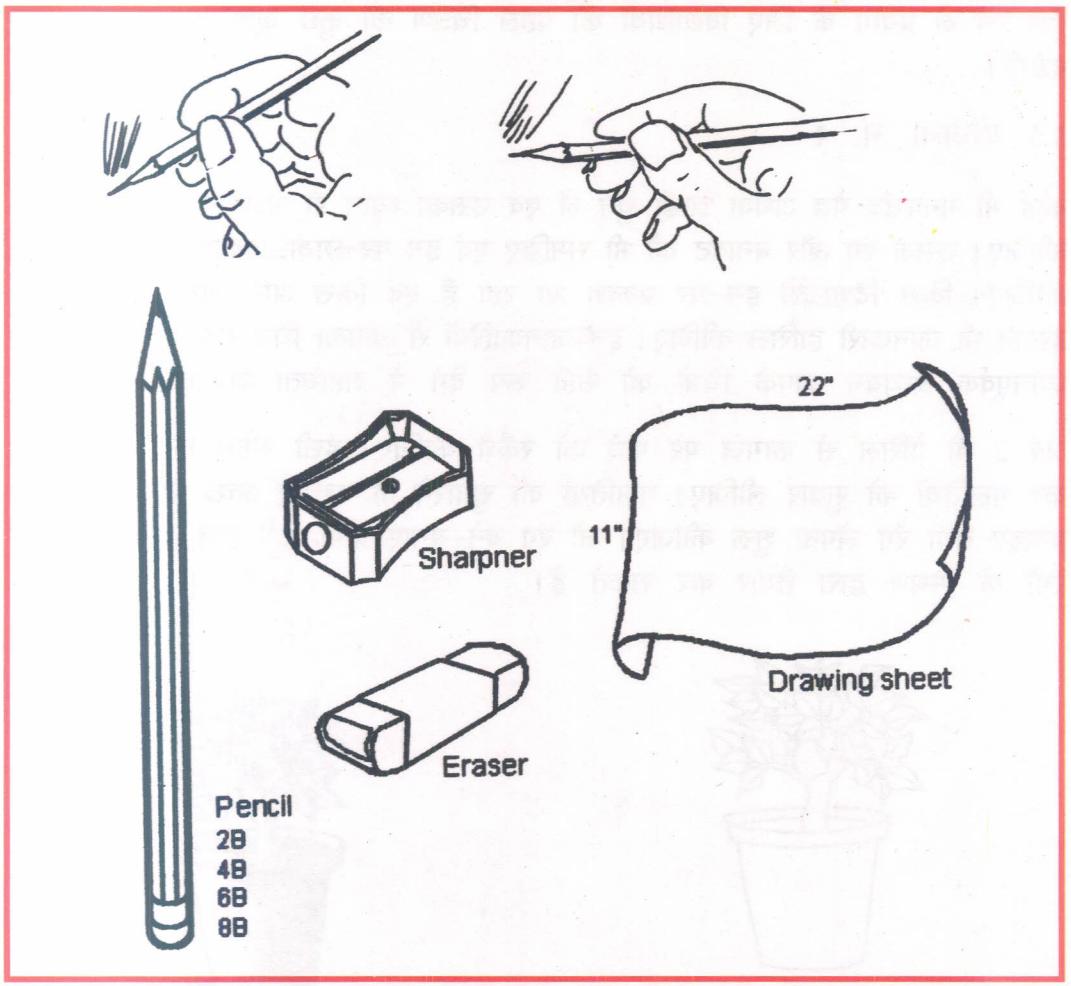

चित्र 3.1

चित्र 3.2(क)

चित्र 3.2(ख)

चित्रकारी के लिए प्रयोग होने वाले ब्रश

तेल रंग के प्रयोग के लिए विद्यार्थियों को पहले चित्रण की कुछ कुशलता हासिल करनी पड़ेगी।

3.3 योजना नं. I

कोई भी मनपसंद पेड़ अथवा झाड़ी चुन लें एवं उसका ध्यान से अध्ययन तथा अवलोकन कीजिए। उसके रंग और बनावट को भी समझिए एवं इन पर छाया–प्रकाश का भी अध्ययन कीजिए। किस दिशा से इन पर प्रकाश आ रहा हैं एवं किस ओर छाया बना रही है, इसकी भी जानकारी हासिल कीजिए। इन जानकारियों से आपका चित्र सही रूप से बनेगा। ध्यानपूर्वक अध्ययन आपके चित्रों को सही रूप देने में सहायता करेगा।

अब 2 बी पेंसिल से कागज पर पौधे को स्कैच कीजिए। इसी स्कैच को दोबारा बना कर गलतियों को सुधार लीजिए। गलतियाँ को सुधारने के पश्चात् अच्छे पेपर पर ड्राईंग बनाइए तथा रंग लेपना शुरू कीजिए। जो रंग बने–बनाए प्राप्त नहीं होते, उनको विभिन्न रंगों के मिश्रण द्वारा तैयार कर सकते हैं।

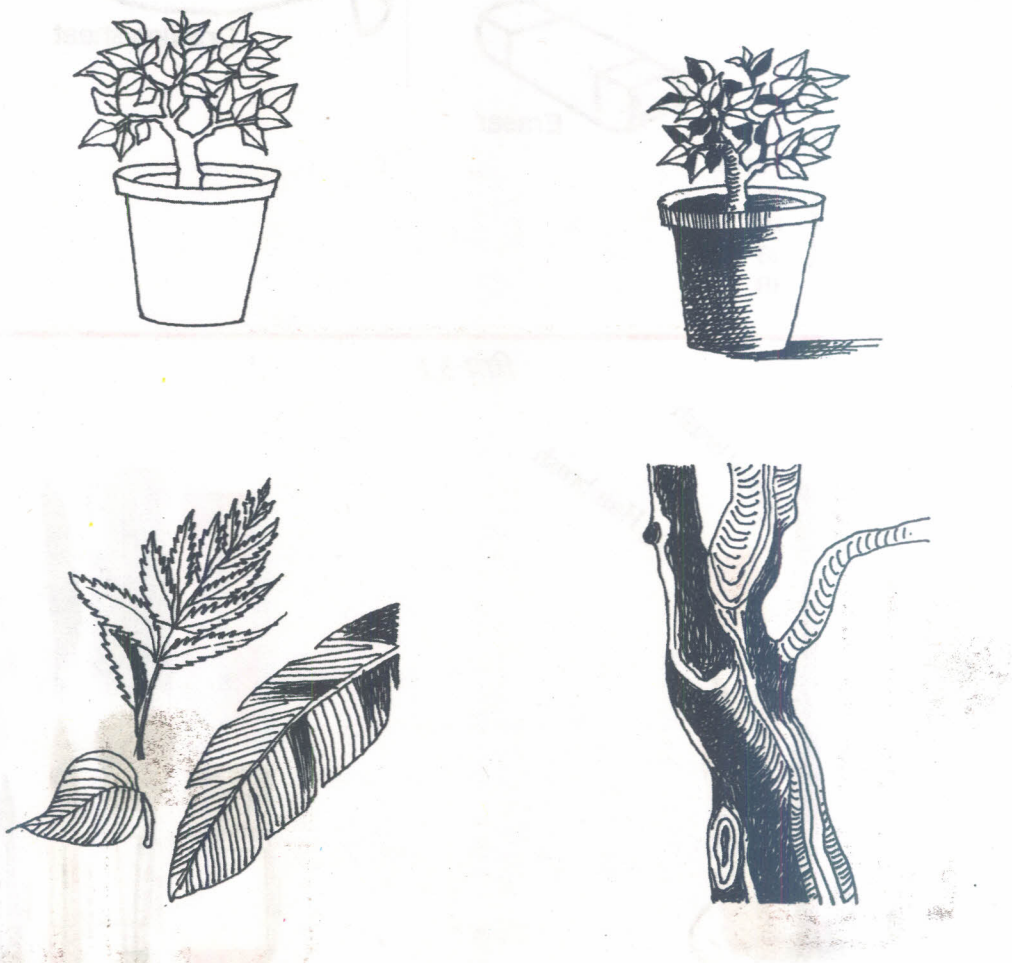

चित्र 3.3

योजना नं. II

कोई भी स्थिर जड़ पदार्थ के चित्र की विषय वस्तु को चुनिए। इस चित्र को पोस्टर कलर द्वारा बनाना है। पोस्टर कलर में रंगों को धीरे–धीरे हल्का टोन देना मुश्किल है अर्थात एक कलर के पास दूसरे कलर का अन्तर स्पष्ट रह जाता है। वस्तु की रचना में डार्कटोन तथा हाईलाइट का व्यवहार होता है। कोई मध्यवर्ती टोन नहीं होता।

पोस्टर कलर के व्यवहार के पहले ओपेक (अस्वच्छ) तथा स्वच्छ रंग का अन्तर जानना आवश्यक है। ओपेक रंग में लेप बहुत मोटा होता है एवं एक रंग दूसरे रंग के साथ धीरे–धीरे नहीं मिलता इसलिए टोन में कोई विभिन्नता नहीं होती। दूसरी ओर स्वच्छ रंग में पानी मिलाकर कर रंग के टोन को हल्का या गाढ़ा किया जा सकता है। इस रंग का लेप इतना स्वच्छ होता है कि कभी–कभी कागज़ की सतह भी नज़र आती है। (चित्र 3.4क, 3.4ख)

वस्तु को मेज के ऊपर या किसी बोर्ड पर रखो। पहले पेन्सिल से वस्तु को ड्रा करो। फिर ड्रा की गई वस्तु पर पहला टोन (जल रंग) भरो।

प्रथम टोन
क्रम–1

पहला टोन सूखने दो। फिर दूसरा टोन लगाएँ और उसे सूखने दें।

दूसरा टोन
क्रम–2

दूसरा टोन सूखने के बाद तीसरा टोन भरें और सूखने के लिए रखें

तीसरा टोन
क्रम–3

चित्र 3.4

**Colour used - Prussian Blue & SAP Green*

3.4 उत्तम चित्र की विशेषताएं (Attributes of a Good Painting)

उत्तम चित्र के कई तत्त्व होते हैं। उदाहरणतः छन्द, संतुलन, समन्वय, संयोजन, रंग, छाया–प्रकाश, बुनावट, परिदृष्टि तथा विषय वस्तु आदि। इन तत्वों के सही व्यवहार द्वारा उत्तम चित्र बनाए जा सकते हैं।

इन विशेषताओं को संक्षेप में समझें–

- **लयात्मकता (Rhythm) :–** लयात्मकता द्वारा चित्र में गति के दृष्टिभ्रम की रचना होती है। इसे प्राप्त करने के लिए आमतौर पर रेखा, आकार तथा रंगों की पुनरावृत्ति होती है। उदाहरणतः पक्षियों की कतारों को एक के बाद एक पंक्ति में उनके आकार और प्रकार में विभिन्नता लाते हुए सजाएं तो एक लयात्मकता का रूप स्पष्ट होता है। (चित्र 3.5क)

चित्र 3.5 क

- **सन्तुलन (Balance) :–** चित्र में संतुलन की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। चित्र के स्पेस तथा आयाम में रंग तथा मास (MASS) को इस तरह से सजाना चाहिए जिससे चित्र के हर अंश की प्रधानता स्पष्ट रहे। उदाहरणतः एक विशाल पेड़ के आकार को चित्र में संतुलित करने के लिए दूसरी ओर कुटिया की छत को उज्ज्वल लाल रंग से लेप कर संतुलित किया जा सकता है। (चित्र 3.5 ख)

चित्र 3.5 ख

- **समन्वय (Harmony):–** चित्र में हारमनी (समन्वय) प्राप्त करने के लिए हर वस्तु को तथा फार्म को एकरूपता तथा सहजता–सरलता के साथ दर्शाना आवश्यक है। एक ही रूप के वस्तुओं की एक चित्र में लयात्मकता भी समन्वय प्राप्त करने में सहायता करती है। एक ही रूप के वस्तुओं को एक के बाद एक प्रयोग करने से भी समन्वयता प्राप्त हो सकती है। कभी–कभी विपरीत तत्व भी, कुशलता के साथ प्रयोग करने पर समन्वयता को प्रकट करते हैं। (चित्र 3.5 ग)

चित्र 3.5 ग

- **संयोजन (Composition) :–** किसी भी कलाकृति में चाक्षुष तत्वों को व्यवस्थित करना ही संयोजन कहलाता है। विभिन्न तत्वों को यदि कलात्मक रूप में सजाया जाए तो सब कलाकृति मिलकर एक अखण्ड रूप जैसी बन जाती हैं। चित्रकार अपने कलात्मक बोध द्वारा छन्द, संतुलन, समन्वय आदि तत्वों को ध्यान में रख कर किसी भी कृति को प्रभावी बनाते हैं। संतोषजनक संयोजन की रचना के पहले कुछ स्कैच कर लेना आवश्यक है।

- **रंग (Colour) :–** रंग मूलतः वस्तु से प्रतिफलित प्रकाश से स्पष्ट होता है। प्रकाश की विभिन्न तरंगों के विस्तार से इंसान के मन पर भी प्रभाव पड़ता है।

  रंग के तीन गुण होते हैं – वर्ण (HNE), भाव–मूल्य (Value) और प्रगाढ़ता (Intensity)। हर रंग का एक भाव होता है। इसे ध्यान में रख कर चित्रकार रंगों का प्रयोग करते हैं। उदाहरणतः उज्ज्वल रंग खुशी के भाव व्यक्त करते हैं। दूसरी तरफ भूरे रंग करूण रस पैदा करते हैं। एक चित्रकार व्यक्तिगत अभिव्यंजनामूलक बोध से रंगों का प्रयोग करता है।

- **विषय वस्तु (Subject) :–** आमतौर पर हर कलाकृति द्वारा कलाकार कुछ संदेश देना चाहते हैं। यद्यपि कभी कभी आधुनिक चित्रकार अमूर्त (Abstract) चित्रों में विषय वस्तु का सही प्रयोग नहीं करते हैं। इसके बावजूद कोई भी कला अभिव्यक्ति–विहीन नहीं हो सकती। चित्रकार चाहे कहानी हो या केवल भाव की अभिव्यक्ति हो, कलाकृति में एक विषय–वस्तु स्पष्ट होती है।

- **केंद्रीय बिंदु (Focal Point) :–** चित्र में ऐसा एक स्थान होता है जिसकी ओर देखने वालों का ध्यान आकर्षित होता है। कलाकार भी चाहते हैं कि कलारसिक इसी अंश पर अधिक ध्यान दें। इस अंश को दर्शनीय और आकर्षक बनाने के लिए चित्रकार तरह–तरह के तत्वों का प्रयोग करते हैं जैसे फार्म तथा रंगों का विषम और तुलनात्मक प्रयोग (CONTRAST), किसी अंश को रंग तथा रेखा देकर अलग अस्तित्व देना, (ISOLATION) आदि। (चित्र 3.5 घ)

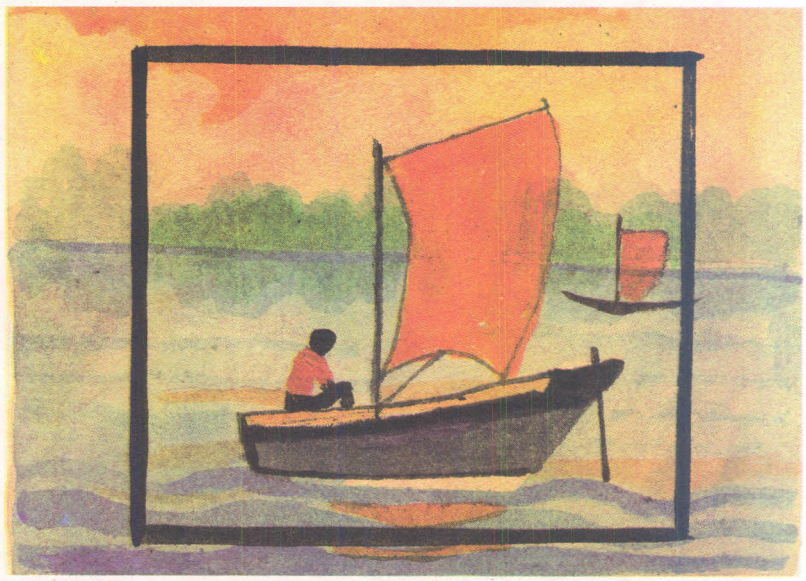

चित्र 3.5 घ

- **बनावट (Texture)** – चित्र में बनावट वह तत्व है जिसे देखते ही दर्शक की उस वस्तु को स्पर्श करने की जिज्ञासा हो। वस्तु के सतह पर चिकनाई अथवा रूक्षता लाने के लिए रंगों का कैसा प्रयोग किया गया है, यह चित्रकार की दक्षता पर निर्भर करता है। (चित्र 3.5 ङ)

चित्र 3.5 ङ

- **परिदृष्टि (Perspective)** – जब कोई चीज़ हमारी दृष्टि से दूर होती है तो उसका स्वरूप छोटा दिखाई देता है जबकि वास्तव में वह समान आकार की होती है। उदाहरण के लिये यदि हम रेलवे लाईन के बीच खड़े हो जायें तो दोनों लाईनें समानांतर होने पर भी वे हमें एक निश्चित दूरी पर मिलती नज़र आती हैं। दृष्टि भ्रम के कारण ऐसा होता है। इसे ही परिद्दष्टि या पर्सपेक्टिव कहा जाता है।

विद्यार्थी को ध्यान में रखना चाहिए कि किसी माध्यम के कुशल प्रयोग से ही उत्तम चित्र नहीं बनता। विषय–वस्तु की सही अभिव्यक्ति स्पष्ट होना आवश्यक है तथा विषय–वस्तु को प्रकट करने में योग्य माध्यम चुनना आवश्यक है।

चित्र में प्रकाश, तान तथा स्पेस का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। बार–बार अभ्यास करने से आप इन तत्त्वों का कुशलता से प्रयोग करने में सफल हो जाएंगे और कुछ दिनों में आप विषयवस्तु के लायक माध्यम तथा तत्वों का प्रयोग करने में कुशल हो जाएंगे।

अपनी पेंटिंग में गहराई, प्रकाश, स्थान आदि के महत्त्व को समझें। शुरू-शुरू में उक्त तत्वों का समावेश साधारण तरीके से करें। धीरे-धीरे आप इनका प्रयोग करने में समर्थ हो जायेंगे। यह सब अभ्यास से सम्भव होगा। समय के साथ-साथ विषय के अनुरूप आप प्रभावी और आकर्षक चित्र बनाने लगेंगे।

विद्यार्थी यह ध्यान में रखें कि केवल अधिक सूक्ष्म ढंग से चित्र बनाने से ही चित्र सुन्दर नहीं होता है, बल्कि वस्तु की विशेषता का आभास कराने से ही चित्र सुन्दर होता है। उदाहरणतः दीवार की हर ईंट को या पेड़ के हर पत्ते को दिखाना आवश्यक नहीं होता है।

3.5 वर्ण परिचय (Introduction of Colour)

वर्ण चित्र का वह पहला और प्रमुख तत्त्व है जो हमारे नेत्रों को अपनी ओर आकर्षित करता है। रंगों के प्रयोग द्वारा भाव को प्रकट किया जा सकता है। "रंगों का चयन चित्रकार की भावना को प्रकट करता है"।

वर्ण चक्र (Colour Wheel) :– इस में विभिन्न वर्ण–क्रम को एक चक्र में दर्शाया गया है। इसमें प्राथमिक (Primary), दूसरे क्रम का (Secondary) तथा बीच का (intermediate) आदि रंगों का प्रदर्शन होता है। (चित्र 3.6)

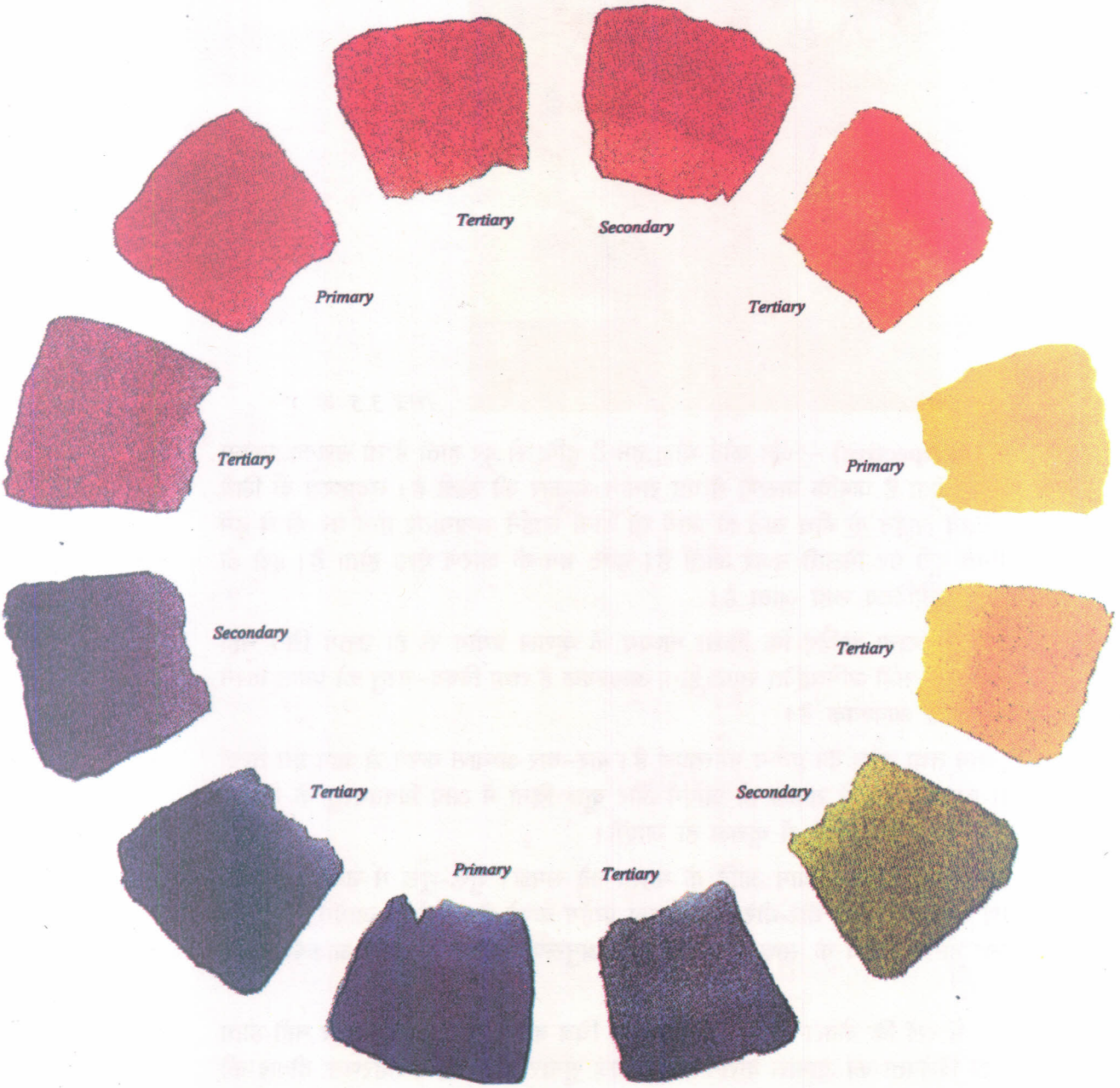

चित्र 3.6

प्राथमिक वर्ण (Primary Colour)– लाल, नीला तथा पीला अन्य रंगों के मिश्रण से नहीं बनाए जा सकते हैं। लेकिन इन तीन रंगों के मिश्रण से निम्नलिखित दूसरे क्रम के रंग बनाये जा सकते हैं।

लाल + पीला = नारंगी रंग
नीला + पीला = हरा
लाल + नीला = बैंगनी रंग

प्राथमिक रंग के साथ उसके समीपवर्ती सेकेन्डरी (secondary) रंग को मिलाने से तृतीय टरशियरी (Tertiary) रंग बनता है''।

चक्र के नीले हरे अंश के रंगों से पीछे हटने का आभास होता है।

लाल, नारंगी तथा पीले–अंश के रंगों में गरमी का प्रभाव प्रकट होता है। ये रंग सतह से आगे आने का आभास देते हैं तथा आकर्षित भी करते हैं।

चक्र में समीपवर्ती रंग एक दूसरे के पूरक (Complementary) होते हैं। दूसरी तरफ चक्र के विपरीत दिशा के रंग विरोध भाव के साथ नाटकीयता को प्रकट करते हैं।

लाल तथा हरा रंग समान मात्रा में है इसलिए इन दोनों रंगों का परिमान भी बराबर है।

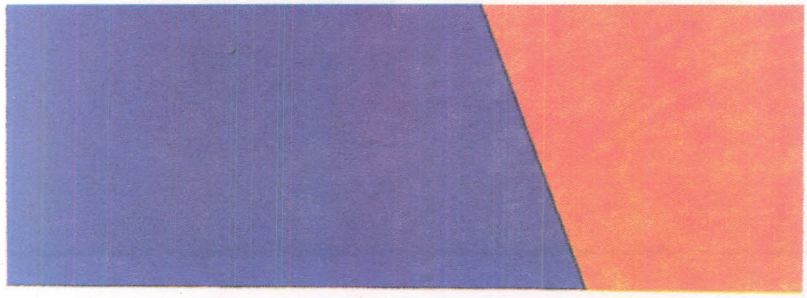

2/3 भाग नीला एवं 1/3 भाग नारंगी रंग मिलाने से एक संतुलित रंग बनता है क्योंकि नारंगी रंग अधिक तेज और चमकदार है।

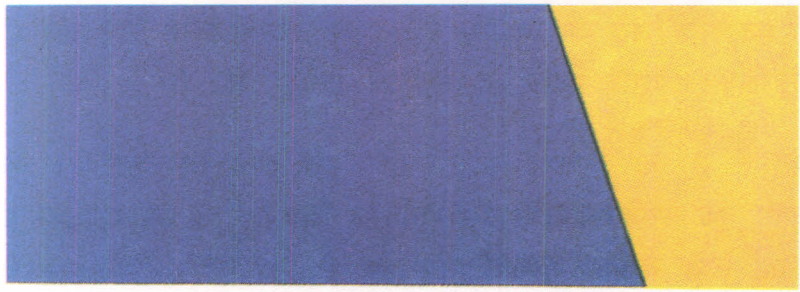

2/3 भाग नीला एवं 1/3 भाग पीला रंग मिलाने से एक संतुलित रंग बनता है क्योंकि पीला रंग अधिक तेज और चमकदार है।

चित्र 3.7

3.6 जल रंग (Water Colour) :

जल रंगों के सही प्रयोग के लिए अतिकुशलता की आवश्यकता होती है। जल रंग मूलतः स्वच्छ रूप में कागज पर लेपे जाते हैं, पर पोस्टर, एक्रेलिक आदि जलमिश्रित रंग अस्वच्छ होते हैं।

जल रंग का अभ्यास करने के लिए निम्नलिखित रंगों का प्रयोग पर्याप्त है:

Two yellows दो पीले	-	Ochre and Chrome गेरु पीला, बसंती पीला
Two reds दो लाल	-	Crimson and Vermillion किरमिची लाल, सिंदूरी लाल
Two blues दो नीले	-	Cobalt and Ultramarine कोबाल्ट नीला, पारसमुद्री नीला
One brown एक भूरा	-	Burnt Umber दग्ध अँबर
One green एक हरा	-	Viridian and sap-green हरा और सैपग्रीन
One black एक काला	-	Lamp black लैंप ब्लैक

सही रंग को चुनने की कुशलता अनुभव से प्राप्त होती है।

बाज़ार में दो प्रकार के जल रंग उपलब्ध हैं – एक विद्यार्थियों के लिए और दूसरा कुशल चित्रकारों के लिए । दूसरे प्रकार के रंग का प्रयोग सही है।

उच्चकोटि का नं. 3, नं. 7 तथा नं. 12 तीन ब्रुश होना आवश्यक है। जल रंगों के प्रयोग के समय एक स्पंज (SPONGE), पानी के लिए कटोरा तथा ड्रॉइंग बोर्ड रखिए। ब्रुश की सफाई तथा उसको सुखाना आवश्यक है।

चित्र बनाने से पहले कागज़ को बोर्ड पर रखकर उसे जलरंग के लिए निम्नलिखित रूप से तैयार कीजिए –

प्रथम क्रम	–	स्पंज द्वारा कागज़ को दोनों तरफ से पानी से तर कीजिए।
दूसरा क्रम	–	कागज़ को बोर्ड पर रखकर आवश्यकता से अधिक पानी को स्पंज द्वारा निकाल दीजिए।
तीसरा क्रम	–	गोंद से चिपचिपी पट्टी से कागज़ को चारों दिशाओं से बोर्ड पर चिपका दीजिए।
अन्तिम क्रम	–	कागज़ को चिकना कीजिए।

मोटे कागज़ के लिए उपर्युक्त प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं है।

जल रंग के चित्र में रंग कोमल तथा प्रवाहमान होने चाहिए। रंग ठीक तरह से घुले तथा सख्त अवयवों से विहीन होने चाहिए।

जलरंग के चित्र सुस्पष्ट और कोमल, सशक्त और सौम्य दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इन विषमतापूर्ण गुणों को अपने चित्रों में डालने की कोशिश करें। संभव है कि पहले ही प्रयास में आप पूर्ण रूप से सुंदर चित्र बना लें। जल रंगों के प्रयोग के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है।

3.7 मोनोक्रोम चित्र (Monochrome Painting)

किसी एक रंग द्वारा चित्र बनाइए। काला या लाल या नीला या हरा रंग के टोन का प्रयोग कीजिए। तीव्र (Strong) वर्ण में अधिक पानी मिलाना है। परन्तु कोमल (Weak) वर्ण में पानी थोड़ा मिलाइए, क्योंकि तीव्र वर्ण बहुत उज्ज्वल होते हैं।

गांव के दृश्य आप मोनोक्रोम जलरंग में बना सकते हैं। पहले पहाड़, नदी, पेड़ आदि की बाहरी रेखाएँ पेंसिल से अंकित कीजिए। विस्तृत रूप में हर तत्त्व का अंकन रंगों द्वारा किया जा सकता है। रंगपट्टिका में पर्याप्त मात्रा में रंग बनाइए।

दस या बारह नम्बर ब्रुश से हल्का रंग लेकर चित्र में आकाश को रंग कीजिए। इसके पश्चात् पहाड़ में गाढ़े रंग का प्रयोग कीजिए। इसके बाद पांच या छः नम्बर ब्रुश से और गाढ़ा रंग लेकर पेड़, कुटिया तथा चित्र के सन्मुख भाग में रंग लेप दीजिए। अब

रूप–रेखाओं को गाढ़े रंग द्वारा स्पष्ट कीजिए। बारीक रेखांकन के लिए दो या तीन नम्बर का ब्रुश प्रयोग कीजिए। (चित्र 3.8)

चित्र 3.8

3.8 सारांश

चित्रकला एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वस्तुओं का रंगीन या काला सफेद रूप चित्रण होते हैं। तेल रंगों को टरपेनटाईन तथा लिनसिड तेल मिलाकर तरल किया जाता है। जल रंग के ब्रुश सामान्य रूप से गोलाकार होते हैं परन्तु तेल रंग के ब्रुश समतल (Flat) तथा कड़े बाल के होते हैं। चित्र बनाने के लिए सामान्य रूप से नं. 3, नं. 6 तथा नं.12 के ब्रुश अधिक काम में आते हैं।

3.9 मॉडल प्रश्न

(1) चित्र बनाने के लिये कौन–सा औजार तथा साधनों का आवश्यकता होती है?

(2) अच्छी चित्रकला के गुणों का वर्णन कीजिए।

(3) वर्ण चक्र क्या है? व्याख्या कीजिए।

(4) जलरंग द्वारा चित्र बनाने के विभिन्न क्रमों का वर्णन कीजिए।

(5) मोनो चित्रकला क्या है? इसकी तकनीक बताइए।

3.10 शब्दकोष

एक्रेलिक रंग – रसायन प्रक्रिया द्वारा रेज़िन तथा ईमालसन के मिश्रण से बना रंग।

कूल कलर – रंग जैसे नीला शीत रंग (Cool Colour) समझा जाता है। दूर के रंग वातावरण के प्रभाव से नीले लगते हैं और इसलिए शीत रंग धीरे–धीरे कम होते जाते हैं।

व्यू फाइंडर – कार्ड बोर्ड के एक छोटे से टुकड़े में चौकोर रूप से काट कर बनाया गया छेद जिससे कलाकार बनाए गए चित्र को किसी विशेष दूरी से देख सकता है।

फोकल पोइंट – पेंटिंग में दृश्य रूप में दिखाई देने वाला मुख्य क्षेत्र।

हाई लाइट – चित्र को सबसे उज्ज्वल तथा हल्का रंग का अंश। जल रंग में कागज पर सफेद रंग तथा तेल रंग में अस्वच्छ सफेद या सफेद के साथ पीला आदि रंग मिलाकर – हाई लाइट का प्रयोग होता है।

पर्सपेक्टिव – द्वि–आयामी सतह पर तीन आयामों को दिखाने की विधि। रेखीय परिदृष्टि वह होती है जिससे वस्तु दूर जाने पर छोटी दिखाई देती है।

पिगमेन्ट – पेंटिंग के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला पदार्थ, विशेष रूप से सूखा पाउडर जिससे पानी अथवा तेल में मिलाने पर रंग बनता है।

प्राइमरी कलर – तीन रंग– लाल, नीला और पीला जिन्हें अन्य रंगों के साथ मिलाकर तैयार नहीं किया जा सकता और जो विभिन्न मिश्रणों से दूसरे रंग बनाते हैं।

टरशियरी (Tertiary colour) रंग – जिन रंगों में तीन प्राइमरी रंग होते हैं।

टोनल वैरिएशन – किसी रंग की गहराई और हल्केपन की मात्रा।

वार्म कलर – साधारणतः नारंगी, लाल जैसा रंग। उष्ण रंग देखने वाले की तरफ बढ़ते प्रतीत होते हैं और शीत रंग कम होते प्रतीत होते हैं।